कहानी

द्रौपदी नहीं बनेगी वो

गाँव की शामें बहुत धीरे उतरती हैं।जैसे दिन थककर किसी पेड़ की छाँव में बैठ गया हो।पर उस धीमे उतरते अँधेरे में कई घरों की रोशनियाँअक्सर किसी लड़की के भविष्य का फैसला भी कर देती हैं।नैना ऐसे ही एक घर में जन्मी थी।उसका बचपन साधारण था मिट्टी का आँगन,बरगद की छाँव,और माँ की वह धीमी आवाज़जो हर लड़की के कान में एक ही बात डालती है 'बेटी, औरत की जिंदगी समझौते से चलती है। 'नैना हर बार सुनती,पर भीतर कहीं एक सवाल उठता 'समझौते अगर जन्म से ही तय हों,तो फिर जीवन और कैद में फर्क क्या रह जाता है? 'माँ को उसकी यह चुप्पी डराती थी।क्योंकि जो लड़कियाँ चुप होकर सोचती हैं,वे एक दिन बोल भी देती हैं।नैना पढ़ने में तेज थी।गाँव से निकलकर वह शहर के कॉलेज पहुँची।वहाँ किताबों ने उसके भीतर एक नया संसार खोल दिया।एक दिन कक्षा में महाभारत पढ़ाया जा रहा था।द्रौपदी का प्रसंग।अध्यापक ने कहा– 'द्रौपदी पाँचों पांडवों की पत्नी बनी। 'कुछ लड़के मुस्कराए।किसी ने धीमे से कहा 'अजीब परंपरा रही होगी। 'नैना का मन जैसे चुभ गया।उसने धीरे से कहा 'इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी यह नहीं कि अन्याय हुआ,बल्कि यह कि उसे परंपरा कहकर स्वीकार कर लिया गया। 'कक्षा में अचानक सन्नाटा छा गया।अध्यापक ने उसे देखा,पर कुछ नहीं कहा।नैना समझ गई थीइतिहास की किताबों में लिखी बातेंसिर्फ घटनाएँ नहीं होतीं,वे समाज के सोचने का तरीका भी बन जाती हैं।समय बीता।पढ़ाई खत्म हुईऔर नैना वापस गाँव लौट आई।घर की चौखट पर कदम रखते हीउसे लगा जैसे दुनिया बदल गई है।अब हर निगाह उसे देख रही थीजैसे वह कोई बेटी नहीं,एक 'रिश्ता' बन चुकी हो।एक शाम घर में कई लोग बैठे थे।चार युवक, उनके माता-पिता,और बीच में बैठे नैना के पिता।नैना को बुलाया गया।वह आई तो कमरे में एक अजीब-सी चुप्पी थी।पिता ने धीरे से कहा 'बेटी... बात थोड़ी अलग है...इनका परिवार बड़ा है...चारों भाई हैं... 'पिता की आवाज़ काँप गई।एक आदमी ने हँसते हुए कहा 'हम चाहते हैं कि तुम हमारे घर की बहू बनो...चारों भाइयों की। 'नैना के कानों में जैसे कोई पुरानी कहानी गूँज गई।द्रौपदी...पाँच पांडव...एक स्त्री का बाँट दिया गया जीवन।एक आदमी बोला... 'अरे इसमें क्या है...महाभारत में भी तो ऐसा हुआ था। 'नैना ने धीरे से सिर उठाया।उसकी आँखों में अब डर नहीं था।बस एक कठोर शांति थी।वह बोली– 'इतिहास पढ़ते समय आपने शायद यह नहीं देखाकि द्रौपदी की सबसे बड़ी पीड़ा पाँच पति नहीं थे,बल्कि यह था कि उसका निर्णय उसका अपना नहीं था। 'कमरा बिल्कुल शांत था।नैना आगे बोली 'औरत कोई परंपरा नहीं होतीजिसे समय-समय पर दोहराया जाए।वह एक जीवन होती हैजिसे सम्मान के साथ जिया जाना चाहिए। 'एक आदमी झुंझला गया। 'बहुत पढ़ लिख गई है...अब संस्कार भूल गई है। 'नैना की आवाज़ अब और स्पष्ट हो गई... 'संस्कार वह नहीं जो स्त्री की स्वतंत्रता छीन लें,संस्कार वह हैं जो मनुष्य को मनुष्य बनाए रखें।

'पिता चुप थे...उनकी आँखों में मजबूरी थी।नैना ने पहली बार पिता की ओर देखा।उसकी आवाज़ धीमी हो गई। 'बाबा, आपने मुझे पढ़ाया इसलिए थाकि मैं अपना जीवन समझ सकूँ...या इसलिए कि मैं बिना पूछे किसी निर्णय में बाँट दी जाऊँ? 'पिता की आँखें भर आई।कमरे में बैठे लोग असहज हो गए।नैना ने धीरे-धीरे कहा... 'इतिहास की हर द्रौपदी की सबसे बड़ी त्रासदीउसकी चुप्पी थी।मैं वह चुप्पी नहीं बनूँगी। 'फिर उसने बहुत साफ शब्दों में कहा... 'मैं द्रौपदी नहीं बनूँगी। 'कमरे में हलचल हुई।किसी ने कहा... 'आजकल की लड़कियाँ घर तोड़ देती हैं। 'किसी ने कहा... 'ऐसी लड़की से शादी कौन करेगा? 'नैना मुस्कराई।और बोली 'जो स्त्री को इतिहास का उदाहरण समझेवह पति नहीं हो सकता।पति वही हो सकता हैजो उसे वर्तमान का मनुष्य समझे। 'उस दिन वह रिश्ता टूट गया।गाँव में बातें फैल गई।किसी ने कहा 'लड़की बिगड़ गई है। 'किसी ने कहा 'इतनी पढ़ाई भी ठीक नहीं। 'पर उन्हीं बातों के बीचकुछ लड़कियाँ पहली बार चुपचाप मुस्कराई।क्योंकि किसी ने पहली बारउनकी तरफ से भी 'ना' कहा था।कुछ महीनों बादनैना शहर में नौकरी करने लगी।वह एक स्कूल में पढ़ाती थी।एक दिन कक्षा मेंमहाभारत का वही प्रसंग पढ़ाया जा रहा था।एक छोटी लड़की ने हाथ उठाकर पूछा 'मैडम... अगर द्रौपदी आज के समय में होतीतो क्या वो भी पाँच पतियों से शादी करती? 'नैना कुछ पल चुप रही।फिर उसने खिड़की से बाहर देखा।

सड़क पर कई लड़कियाँस्कूल की ओर जा रही थीं।उनके कदमों में आत्मविश्वास था।नैना मुस्कराई।और बोली 'अगर द्रौपदी आज होती,तो शायद वह भी यही कहतीइतिहास का सम्मान करो,पर उसकी बेड़ियाँ मत पहन लो। 'कक्षा में सन्नाटा था।फिर उसने धीरे से अंतिम वाक्य कहा 'द्रौपदी होना त्रासदी नहीं था,पर आज द्रौपदी बननाअपनी स्वतंत्रता छोड़ देना होगा। 'और फिर वह रुकी।उसकी आवाज़ बिल्कुल स्पष्ट थी 'इसलिए...द्रौपदी नहीं बनेगी वो।वो अपनी कहानी खुद लिखेगी। 'खिड़की के बाहर हवा चल रही थी।और उस हवा में जैसे एक नई पंक्ति जन्म ले रही थी... 'जिस दिन स्त्री अपने जीवन का निर्णय खुद लेगी,उसी दिन इतिहास सच में बदलना शुरू होगा।

शिवम यादव अंतापुरिया

कहानी

सच्ची घटना जो कानून बना?

दिल्ली से लखनऊ जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेन तेज रफ्तार से दौड़ रही थी। कोच नंबर ए2 में यात्री अपनी-अपनी दुनिया में मशगूल थे। कोई मोबाइल पर स्क्रॉल कर रहा था, कोई सो रहा था तो कोई परिवार के साथ खाना खा रहा था।

उसी कोच की साइड लोअर सीट पर एक साधारण कपड़ों में लगभग 35 वर्षीय महिला बैठी थी। चेहरे पर आत्मविश्वास था, लेकिन कपड़े और व्यवहार देखकर किसी को भी अंदाजा नहीं हो सकता था कि वह कोई बड़ी अधिकारी हो सकती है। वह बार-बार अपना मोबाइल चेक कर रही थी क्योंकि नेटवर्क नहीं आ रहा था। असल में वह अपने ई-टिकट का स्क्रीनशॉट खोलने की कोशिश कर रही थी।तभी टीटीई राजेश कोच में घुसा। राजेश अपने सख्त और कठोर व्यवहार के लिए पूरे रूट पर मशहूर था। 'टिकट... टिकट दिखाइए...' वह एक-एक सीट पर चेक कर रहा था। कुछ ही देर में वह उस महिला के सामने खड़ा हो गया।मैडम, टिकट दिखाइए।महिला ने विनम्रता से कहा, 'जी सर, मोबाइल में है। बस एक मिनट, नेटवर्क नहीं आ रहा है।राजेश ने सख्त स्वर में कहा, 'जल्दी कीजिए, मेरे पास टाइम नहीं है।महिला ने कोशिश की, लेकिन नेटवर्क नहीं आया। उसने शांत स्वर में कहा, 'सर, मैं पीएनआर नंबर बता देती हूं, आप चेक कर लीजिए।राजेश का मूड पहले से ही खराब था। उसने तेज आवाज में कहा, 'रोज यही ड्रामा होता है। बिना टिकट चढ़ जाते हैं और फिर बहाने बनाते हैं। 'महिला ने फिर कहा, 'सर, मेरा टिकट कन्फर्म है। थोड़ी देर रुक जाइए। 'लेकिन राजेश ने एक पल भी नहीं सुना। उसने टिकट चार्ट देखा और जल्दबाजी में नाम नहीं मिला। उसने फैसला सुना दिया, 'अगले स्टेशन पर उतरिए। बिना टिकट यात्रा अपराध है।कोच में सन्नाटा छा गया। कई यात्री महिला को शक की नजर से देखने लगे। महिला ने खुद को संभाला और पूछा, 'आपको यकीन है कि आप सही कर रहे हैं?राजेश ने ठंडे स्वर में जवाब दिया, 'मैं अपना काम कर रहा हूं।ट्रेन रामपुर रोड स्टेशन पर रुकी। राजेश ने इशारा किया और महिला बिना कुछ बोले अपना बैग उठाकर ट्रेन से उतर गई। उसके चेहरे पर नाराजगी नहीं, बल्कि एक अजीब आत्मविश्वास था।प्लेटफॉर्म पर उतरते ही महिला ने मोबाइल देखा। अब नेटवर्क आ चुका था। टिकट पूरी तरह कन्फर्म था। उसने हल्की मुस्कान दी और एक नंबर डायल किया। 'गुड मॉर्निंग मैम मैं बोल रही हूं ट्रेन नंबर 12578 मुझे टीटीई ने बिना टिकट बताकर उतार दिया है। मैं अभी रामपुर रोड स्टेशन पर हूं। तुरंत स्टेशन मास्टर को सूचना दीजिए।फोन कट गया। महिला शांत भाव से प्लेटफॉर्म की बेंच पर बैठ गई।कुछ ही मिनटों में छोटे से रामपुर रोड स्टेशन पर हड़कंप मच गया। स्टेशन मास्टर सुरेश के फोन पर कॉल आने लगा। 'क्या आपके स्टेशन पर रेलवे बोर्ड की सीनियर अधिकारी अंजलि वर्मा उतरी हैं?सुरेश दौड़ते हुए प्लेटफॉर्म पर पहुंचा और जैसे ही उसकी नजर महिला पर पड़ी, उसके पैरों तले जमीन खिसक गई। महिला अब भी शांत बैठी थी। लेकिन पूरा स्टेशन हिलने वाला था और एक टीटीई की जिंदगी हमेशा के लिए बदलने वाली थी।रामपुर रोड स्टेशन छोटा सा स्टेशन था। यहां आमतौर पर सिर्फ पैसेंजर ट्रेनें रुकती थी। एक्सप्रेस ट्रेन का रुकना भी कम ही होता था। लेकिन आज माहौल अलग होने वाला था। महिला प्लेटफार्म की बेंच पर बैठी शांत नजर आ रही थी। जैसे उन्हें किसी चीज की जल्दी ही नहीं थी। लेकिन स्टेशन मास्टर के कमरे में हड़कंप मच चुका था। फोन की घंटी लगातार बज रही थी। स्टेशन मास्टर सुरेश ने जैसे ही फोन उठाया उधर से तेज आवाज आई। क्या आपके स्टेशन पर रेलवे बोर्ड की सीनियर अधिकारी उतरी हैं अभी? सुरेश चौंक गया।जी जानकारी नहीं। कौन अधिकारी? उधर से जवाब आया। नाम अंजलि वर्मा। तुरंत प्लेटफार्म चेक कीजिए। सुरेश के हाथ कांप गए। जी अभी अभी देखता हूं। वो दौड़ते हुए प्लेटफार्म पर आया और जैसे ही उसकी नजर उस महिला पर पड़ी उसका दिल धक से रह गया। वो महिला आराम से बैठी थी जैसे किसी का इंतजार कर रही हो। सुरेश ने तुरंत पास जाकर कहा मैम नमस्ते आप अंजलि मैम। महिला ने हल्की मुस्कान के साथ कहा जी सुरेश का चेहरा उतर गया। मैम आपने पहले क्यों नहीं बताया? महिला ने शांत आवाज में कहा। क्यों बताना चाहिए था? सुरेश के पास कोई जवाब नहीं था। तभी महिला ने सीधे पूछा, 'उस ट्रेन का टीटीई कहां है?' सुरेश घबरा गया। मैम वो ट्रेन तो निकल गई। महिला ने मोबाइल उठाया। ठीक है। ट्रेन को अगले स्टेशन पर रोकिए। सुरेश ने तुरंत कंट्रोल रूम फोन लगाया। उधर से आदेश आया। ट्रेन तुरंत अगले स्टेशन पर रोकी जाए।कुछ ही मिनट में पूरी रेलवे लाइन पर सूचना फैल गई। उधर ट्रेन में टीटीई राजेश आराम से अपनी सीट पर बैठा था। उसे लगा उसने नियम के अनुसार काम किया। अचानक गार्ड उसके पास दौड़ता हुआ आया। राजेश कंट्रोल से मैसेज आया है। ट्रेन अगले स्टेशन पर रोकी जाएगी। राजेश ने चौंक पर पूछा। क्यों? गार्ड ने धीमे स्वर में कहा। जिस महिला को उतारा था, वह रेलवे बोर्ड की अधिकारी निकली। राजेश का चेहरा सफेद पड़ गया।क्या? उसके हाथ कांपने लगे। उसे याद आया महिला ने उतरते समय कहा था आपको यकीन है आप सही कर रहे हैं? राजेश के दिमाग में वही आवाज गूंजने लगी। ट्रेन अगले स्टेशन पर रुक गई। कुछ ही मिनट में रेलवे के सीनियर अधिकारी प्लेटफार्म पर पहुंच गए। राजेश को तुरंत नीचे बुलाया गया। वह उतरते समय ही समझ गया था मामला गंभीर है। उधर रामपुर रोड स्टेशन पर महिला अब स्टेशन मास्टर के कमरे में बैठी थी।कुछ ही देर में काली गाड़ी आकर रुकी। उसमें से कई अधिकारी उतर कर अंदर आए। सब ने एक साथ कहा, गुड आफ्टरनून मैम। स्टेशन मास्टर सुरेश यह दृश्य देखकर पसीना पसीना हो गया। उसे पहली बार एहसास हुआ कि जिनको वह साधारण महिला समझ रहा था, वह कितनी बड़ी अधिकारी हैं। महिला अंजलि वर्मा ने सीधे पूछा, टीटीई आ गया। उधर से जवाब आया। जी मैम रास्ते में है। अंजलि की आंखों में अब सख्ती साफ दिख रही थी। लेकिन उनके चेहरे

पर गुस्सा नहीं बल्कि एक अधिकारी वाला शांत आत्मविश्वास था। करीब 20 मिनट बाद राजेश को स्टेशन मास्टर के कमरे में लाया गया। जैसे ही उसकी नजर अंजलि पर पड़ी उसके पैरों तले जमीन खिसक गई। वो समझ चुका था अब बचना मुश्किल है। राजेश ने तुरंत हाथ जोड़ दिए। मैम मुझसे गलती हो गई। लेकिन अंजलि ने उसे रोका। गलती। कमरे में सन्नाटा छा गया। अंजलि धीरे से उठी और उसकी आंखों में देखते हुए बोली गलती तब होती है जब इंसान अनजाने में कुछ गलत कर दे। राजेश का सिर झुक गया। अंजलि की आवाज अब और सख्त हो गई। लेकिन आपने मुझे बोलने का मौका ही नहीं दिया।कमरे में मौजूद सभी अधिकारी चुप थे। अंजलि ने आगे कहा। अगर मैं अधिकारी नहीं होती तो आज क्या होता? राजेश के पास जवाब नहीं था। उसकी आंखों में डर साफ दिख रहा था। लेकिन असली तूफान अभी बाकी था। क्योंकि अंजलि अब सिर्फ अपनी बेइज्जती का नहीं पूरे सिस्टम की सच्चाई सामने लाने वाली थी। कमरे में सन्नाटा इतना गहरा था कि किसी की सांसों की आवाज तक सुनाई दे रही थी। टीटीई राजेश सिर झुका कर खड़ा था। उसके चेहरे पर पछतावा भी था और डर भी।लेकिन अंजलि वर्मा की आंखों में सिर्फ गुस्सा नहीं था। वो कुछ सोच रही थी। कुछ पल बाद उन्होंने शांत स्वर में पूछा। आपको याद है मैंने आपसे क्या कहा था? राजेश ने धीरे से कहा जी मैम आपने कहा था मुझे अपनी बात समझाने का मौका दीजिए। अंजलि ने सिर हिलाया और आपने क्या किया? राजेश की आवाज कांप गई। मैम मैंने आपको उतरने को कहा। अंजलि ने तुरंत कहा, नहीं आपने मुझे अपमानित करके उतारा।कमरे में बैठे अधिकारियों के चेहरे भी गंभीर हो गए। अंजलि ने आगे कहा। मैंने आपको टिकट दिखाने के लिए मोबाइल निकाला था। राजेश ने चौंक कर सिर उठाया। मोबाइल। अंजलि ने अपना फोन टेबल पर रखा। स्क्रीन ऑन की। उसमें ई टिकट साफ दिखाई दे रहा था। राजेश की आंखें फैल गई। उसके हाथ कांपने लगे। उसने बुदबुदाते हुए कहा। मैम मुझे लगा आप बहाना बना रही हैं। अंजलि ने तेज आवाज में कहा, 'क्यों लगा?' राजेश चुप हो गया। उसके पास कोई जवाब नहीं था।कमरे में बैठे एक सीनियर अधिकारी ने धीरे से कहा, 'मैम, शायद इन्हें लगा होगा।' अंजलि ने तुरंत उन्हें रोक दिया। नहीं, मैं खुद सुनना चाहती हूं। उन्होंने राजेश की तरफ देखा। क्यों लगा? राजेश की आंखों में पानी आ गया। मैम, आपकी ड्रेस साधारण थी। कमरे में मौजूद सभी लोग समझ गए असली कारण क्या था? अंजलि की आवाज अब बहुत शांत हो गई। मतलब अगर कोई साधारण कपड़े पहने तो वह झूठा होता है।राजेश रो पड़ा। मैम मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई। लेकिन अंजलि अभी खत्म नहीं हुई थी। उन्होंने धीरे से कहा आज आपने मुझे उतारा क्योंकि आपको लगा मैं गरीब हूं। राजेश के दिल पर जैसे हथौड़ा पड़ा। अंजलि ने आगे कहा। लेकिन सोचिए अगर मेरी जगह कोई बुजुर्ग महिला होती, कोई मजदूर, कोई बीमार इंसान। कमरे में बैठे सभी अधिकारी अब असहज महसूस कर रहे थे। अंजलि की आंखों में दर्द साफ दिख रहा था। आपको पता है ट्रेन से उतारे जाने के बाद मुझे प्लेटफार्म पर बैठना पड़ा। उन्होंने हल्की मुस्कान के साथ कहा। मैं अधिकारी हूं इसलिए मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई। फिर आवाज भारी हो गई। लेकिन आम आदमी का क्या?यह सवाल कमरे में गूंज गया। राजेश जमीन पर बैठ गया। मैम मुझे माफ कर दीजिए। लेकिन अंजलि ने तुरंत कहा माफी सिस्टम नहीं सुधारती। कमरे में बैठे अधिकारी अब समझ गए थे कुछ बड़ा होने वाला है। अंजलि ने अपने बैग से एक छोटा रिकॉर्डर निकाला। सब हैरान रह गए। यह क्या है मैम? एक अधिकारी ने पूछा। अंजलि ने जवाब दिया। जब से टीटीई मेरे पास आया था, मैंने रिकॉर्डिंग चालू कर दी थी। राजेश के चेहरे का रंग उड़ गया। अंजलि ने रिकॉर्डिंग चला दी। कमरे में वही आवाज गूंजने लगी। बहाने मत बनाइए। टिकट नहीं है तो उतरिए। मैडम मुझे समझाने का मौका दीजिए। बहुत देखे हैं ऐसे लोग। उतरिए। हर शब्द अब राजेश को अंदर से तोड़ रहा था। रिकॉर्डिंग खत्म हुई। कमरे में कोई बोल नहीं रहा था।अंजलि ने धीरे से कहा। यह सिर्फ एक इंसान की गलती नहीं है। उन्होंने सबकी तरफ देखा। यह सिस्टम की बीमारी है। सीनियर अधिकारी तुरंत बोले मैम हम तुरंत एक्शन लेंगे। लेकिन अंजलि ने सर हिलाया। नहीं सिर्फ सस्पेंशन से कुछ नहीं होगा। सभी चौंक गए। तो मैम अंजलि ने कहा आज मैं पूरे जोन की जांच करवाऊंगी। कमरे में बैठे अधिकारियों के चेहरे उतर गए क्योंकि इसका मतलब था बहुत लोगों की लापरवाही सामने आने वाली थी। उधर राजेश रोते हुए बोला मैम मेरी नौकरी चली जाएगी।अंजलि ने उसकी तरफ देखा और जो कहा उसने सबको हैरान कर दिया। नौकरी बच भी सकती है। राजेश ने उम्मीद से सर उठाया लेकिन अंजलि ने आगे कहा अगर आप सच बोलेंगे। राजेश समझ गया अब छिपाने का कोई फायदा नहीं। उसने कांपती आवाज में कहा, 'मैम, सच यह है कि हम लोगों पर ऊपर से प्रेशर रहता है ज्यादा फाइन काटने का। कमरे में बैठे अधिकारी एक दूसरे को देखने लगे। अंजलि की आंखों में चमक आ गई क्योंकि अब सच्चाई सामने आने वाली थी। कमरे में बैठे सभी अधिकारी अब पूरी तरह सतर्क हो चुके थे।टीटीई राजेश की बात ने माहौल बदल दिया था। उसने डरते-डरते कहा, मैम हम लोगों पर रोज दबाव रहता है ज्यादा से ज्यादा फाइन काटने का। वरना ऊपर रिपोर्ट जाती है कि काम ठीक नहीं कर रहे। कमरे में बैठे कुछ अधिकारियों के चेहरे उतर गए क्योंकि बात अब सीधे सिस्टम तक पहुंच चुकी थी। अंजलि वर्मा कुर्सी से उठी। उनकी आंखों में अब गुस्सा नहीं था बल्कि दृढ़ निश्चय था। उन्होंने शांत आवाज में कहा। मतलब लक्ष्य पूरा करने के लिए निर्दोष लोगों को परेशान किया जाता है।राजेश ने सिर झुका लिया। जी मैम कई बार। एक सीनियर अधिकारी तुरंत बोला मैम ऐसा नहीं है। लेकिन अंजलि ने हाथ उठाकर उसे रोक दिया। मैं सब समझ रही हूं। फिर उन्होंने सीधे राजेश से पूछा, 'क्या सिर्फ तुम या और लोग भी?' राजेश ने कांपते हुए कहा, 'मैम, कई लोग।' यह सुनते ही कमरे में सन्नाटा छा गया। अंजलि ने तुरंत आदेश दिया। आज से इस जोन की स्पेशल जांच होगी। सीनियर अधिकारी चौंक गए। मैम पूरा जोन? हां, पूरा जोन। उनकी आवाज में इतना आत्मविश्वास था कि कोई विरोध नहीं कर पाया।उसी दिन शाम रेलवे ऑफिस में हड़कंप मच गया। जांच टीम बनाई गई। पिछले छ महीनों के फाइन रिकॉर्ड निकाले गए और जो सामने आया वह चौंकाने वाला था। कई मामलों में यात्रियों से बिना वजह जुर्माना लिया गया था। कुछ मामलों में टिकट होने के बावजूद फाइन काटा गया था और कुछ जगह तो सीधे रिश्वत के आरोप भी सामने आए। रिपोर्ट रात तक अंजलि वर्मा के सामने रख दी गई। उन्होंने फाइल बंद की और गहरी सांस ली।यही वजह है लोगों का भरोसा टूटता है। अगले दिन पूरे जोन में आदेश जारी हुआ। कई टीटीई सस्पेंड कुछ अधिकारियों पर विभागीय जांच और सबसे बड़ा फैसला यात्री सम्मान प्रोटोकॉल लागू किया गया। अब कोई भी अधिकारी बिना पूरी जांच के यात्री को ट्रेन से नहीं उतार सकता था। उधर राजेश वह अपने घर में बैठा था। आंखों में डर दिल में पछतावा। उसे लग रहा था अब नौकरी खत्म। तभी उसके फोन पर कॉल आया ऑफिस से। वो कांपते हुए पहुंचा। कमरे में अंजलि वर्मा बैठी थी। राजेश की हालत खराब हो गई। मैम मुझे माफ कर दीजिए। अंजलि ने शांत स्वर में कहा। बैठिए।राजेश बैठ गया। दिल तेजी से धड़क रहा था। अंजलि ने कहा, 'आपकी गलती बहुत बड़ी थी। राजेश की आंखों में आंसू आ गए। जी मैम लेकिन अगले ही पल अंजलि ने कहा लेकिन आपने सच बोला। राजेश ने हैरानी से सिर उठाया। मैम अंजलि ने कहा अगर आप सच नहीं बताते तो सिस्टम की बीमारी सामने नहीं आती। राजेश की आंखों से आंसू बहने लगे। अंजलि ने आगे कहा। इसलिए आपको एक मौका दिया जा रहा है। राजेश समझ ही नहीं पाया। मौका हां आपको सस्पेंड नहीं किया जाएगा लेकिन ट्रेनिंग पर भेजा जाएगा। राजेश रो पड़ा। मैम मैं जिंदगी भर याद रखूंगा। अंजलि ने गंभीर आवाज में कहा। याद रखिए वर्दी ताकत नहीं जिम्मेदारी होती है। कमरे में बैठे सभी लोग यह सुन रहे थे। कुछ महीने बाद उसी रूट पर ट्रेन चल रही थी। राजेश फिर ड्यूटी पर था। लेकिन इस बार उसका व्यवहार बदल चुका था। वह हर यात्री से विनम्रता से बात कर रहा था। तभी एक बुजुर्ग महिला आई। टिकट ढूंढ नहीं पा रही थी। पहले वाला राजेश होता तो शायद गुस्सा करता। लेकिन अब उसने मुस्कुरा कर कहा, कोई बात नहीं आराम से ढूंढिए। पास खड़े लोग हैरान थे। तभी पीछे से एक आवाज आई। लगता है आपने सीख लिया। राजेश मुड़ा। सामने अंजलि वर्मा खड़ी थी। साधारण कपड़ों में। राजेश तुरंत सीधा खड़ा हो गया।मैम नमस्ते।अंजलि ने हल्की मुस्कान दी। अब आप सही मायनों में अधिकारी बन गए हैं। राजेश की आंखों में गर्व था। कहानी खत्म होने से पहले अंजलि के शब्द स्क्रीन पर उभरते हैं। पद बड़ा नहीं होता। व्यवहार बड़ा होता है। सिस्टम तभी बदलेगा जब इंसान बदलेगा।अंबिका सरगम से साभार।

दिनेश गंगराड़े समरपार्क, निपानिया इंदौर452010मप्र

स्मृतियों के साए....

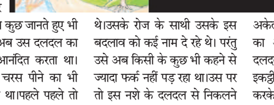

सुरजीत एक हफ्ते की छुट्टी काटकर वापस ड्यूटी पर जा रहा था। सुबह आठ बजे घर से चला था और इस समय जब वह यहां चमेरा बस स्टैंड पर बस से उतरा तो तीन बज गए थे। रास्ता तो कोई चार घंटे का था। परंतु उस जमाने में बसें बड़ी देर के बाद चलती थीं । आज की तरह न तो इतनी ज्यादा बसें हुआ करती थी और न ही सड़कों की हालत अच्छी थी। सिंगल रोड़ हुआ करते थे। ड्राइवर बड़ी सावधानी व आराम से चलते थे। सिंगल रोड होने के कारण दुर्घटनाओं के ज्यादा चांस होते थे। इसलिए ड्राइवर ड्राइविंग करते हुए बड़े सतर्क रहते थे।आज जिस सफर को करने में दो घंटे लगते हैं तब तीन साढ़े तीन घंटे लगते थे। इसलिए चार घंटे के रास्ते को तय करने के लिए सात घंटे लग गए थे। यहां पहाड़ में तब प्राइवेट बसें नहीं चलती थीं ।सिर्फ एच आर टी सी की बसें ही चलती थीं । बसें कम होने के कारण कई रूटों पर दिन में दो-तीन बसें ही चलती थीं। एक बस छूट गई तो दूसरी बस के लिए दो-तीन घंटे का इंतजार करना पड़ता था । यह अस्सी-नब्बे के दशक की बात है। वह बस से उतरा और सामने दुकान से सिगरेट की डिबिया ली और फिर पीठ पर बैग उठाए पहाड़ की चढ़ाई पर चल पड़ा। जून का महीना था। दोपहर होने लगी थी परंतु धूप बहुत तेज थी । चढ़ाई यहीं से शुरू होती थी। दरिया के किनारे सड़क से पहाड़ की चोटी तक लगभग 9 किलोमीटर की खड़ी सीधी चढ़ाई का रास्ता था। इस चढ़ाई को तय करने में तीन से चार घंटे लग जाते थे। बिलकुल खड़ी चढ़ाई चढ़ते हुए थोड़ी-थोड़ी दूर बाद विश्राम के लिए रुकना पड़ता था।इस चढ़ाई को सामान के साथ चढ़ना तो और भी मुश्किल हो जाता था । परंतु नौकरी थी और जवानी के दिन भी थे ।इस सीधी तीखी चढ़ाई से डर नहीं लगता था।पहाड़ भी कदमों में झुका सा लगता था, कोई परवाह नहीं ।जवानी के दिन ऐसे ही होते हैं।रोमांच और जोश से लबरेज। बड़ी से बड़ी चट्टानों को फांदकर आदमी आगे निकल जाता है..।थोड़ी दूर चलने के बाद नाले की बगल में पेड़ की छाया थी। वह वहां चट्टान पर थोड़ी देर आराम करने के लिए बैठ गया।उसने पेंट की जेब से सिगरेट निकाला और सुलगा लिया । सिगरेट की डिबिया पर वैधानिक चेतावनी पढ़ी , लिखा था-' सिगरेट स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।' पढ़कर मुस्कुराया।उसकी तरह न जाने कितने ही लोग सिगरेट सुलगाते हुए इस वैधानिक चेतावनी को पढ़ते होंगे। परंतु...? फिर इस वैधानिक चेतावनी को नजर अंदाज करके सिगरेट सुलगा ही लेते हैं । जैसे उसने सुलगा लिया था।यह अमल कभी छूटता नहीं ।नशे का दलदल ऐसा ही होता है ।आदमी सब कुछ जानता है परंतु एक बार गिरने के बाद निकलना बहुत मुश्किल होता है।परंतु फिर भी संभावनाएं हमेशा जिंदा रहती हैं कोई निकलना चाहे तो इतना मुश्किल भी नहीं। बस इच्छाशक्ति होनी चाहिए । फिर कोई काम मुश्किल नहीं।उसने भी तो अपने कलीग के कहने पर पहले एक एक कश लगाना शुरु किया था और फिर धीरे धीरे एक सिगरेट पर जा पहुंचा। उसके बाद पीने की केपेसिटी भी बढ़ती गई और डिबियां भी। उसने गिनती की तो आज यह उसका सातवां पैकेट था दिन का जो उसने अब यहां खरीदा था।अभी तो तीन बजे थे शाम तक खत्म हो जाना था और हो सकता है एक पैकेट और लेना पड़े। आज पहली बार वह अपनी महीने की सैलरी और खर्चे का हिसाब किताब लगाने लगा ।उस समय साढ़े तीन रुपए में फोर स्केयर का एक पैकेट मिलता था। उसने सात पैकेट का टोटल किया तो साढ़े चौबीस रुपए बने और महीने के सा्त सौ बीस के लगभग।उसने अपने अकेले के लिए एक किलो दूध लगवाया था ?5 किलो के हिसाब से। शाम तक एक किलो दूध खत्म हो जाता था चाय में ही।रात को उसे पीने के लिए एक गिलास तक नहीं बचता था। सारा दिन उसके क्वार्टर में रौनकें लगी रहती थीं। एक गया तो दूसरा आ गया दूसरा गया तो तीसरा..।खर्चा तो फिर होना ही था।उसने सारे सामान का हिसाब लगाया तो जितनी उसकी सैलरी बनती थी उतना ही खर्चा बन रहा था। उसने इस तरह पहली बार अपनी आय व्यय का हिसाब किताब किया था । वरना उसका पूरा वेतन कहां जाता है उसने कभी हिसाब नहीं लगाया। आज उसने पहली बार पैसे की वैल्यू का हिसाब लगाया था।उसे लगा था इस तरह तो सारा वेतन उसका खाने पीने में ही खत्म हो जाएगा। फिर इतने दूर पहाड़ पर जाकर नौकरी करने का क्या औचित्य? घर में

पत्नी बेटी व माता-पिता चार लोग उसके इसी वेतन पर निर्भर थे। उसने सोचा इससे तो बेहतर था घर में ही रहा जाता और वह भीतर ही भीतर उद्विग्न हो उठा था। परंतु इस सीखे हुए नशे और चादर के बाहर फैलाई हुई टांगों को इतनी जल्दी संतुलन में लाना आसान भी नहीं था। अब उसने निश्चय किया कि सिगरेट थोड़ा कम कर देंगे और बीड़ी पीना शुरु कर देंगे। ताकि थोड़ा बजट ठीक किया जा सके। फिर उसने अपने क्वार्टर का जो एक्स्ट्रा खर्चा था उसे भी कम करने का निश्चय किया। अब उसने भीतर ही भीतर खुद से वादा किया था कि अपने पैर अपनी चादर से बाहर नहीं जाने दूंगा।परंतु कोई भी काम इतना आसान तो होता नहीं है जितना आदमी आसान समझता है।फिर भी दृढ़ निश्चय और विश्वास भरे विचार ही किसी भी काम की सफलता के मूल में रहते हैं। बिना विचार के कोई भी काम नहीं किया जा सकता।हर कार्य के पीछे विचार छाया की तरह खड़ा रहता है।वह सोच रहा था जब कॉलेज में इस तरह नशे सीखने की उम्र थी तब तो नशे के साथ हाथ नहीं लगाया और अब जब वह दौर निकल गया है तो वह किस दलदल में जा धंसा है?यह सब संगत का असर था। उसके कलीग ने ही जैसे उसे उंगली पकड़कर दलदल पर लाकर खड़ा कर दिया था।वह सब कुछ जानते हुए भी जैसे बेबस था।अब उस दलदल का आकर्षण उसे आनंदित करता था। इस दौरान उसे चरस पीने का भी चस्का लग गया था।पहले पहले तो वह शाम को उसके साथ पी लेता था परंतु धीरे-धीरे उसने सुबह ही अकेले पीनी शुरु कर दी थी।उस चट्टान पर बैठे हुए आज पहली बार उसे जैसे ज्ञान हो रहा था। यह कोई दैवीय कृपा थी या पुरखों का आशीष...,आज पहली बार उसने नशे की इस दलदल के आकर्षक से वितृष्णा महसूस की थी।अब तक धूप थोड़ा ढल आई थी। गर्मी भी थोड़ी कम हो गई थी। विश्राम भी हो गया था अब उसने अपना बैग फिर पीठ पर उठाया और चल पड़ा।वितृष्णा और आकर्षण का यह खेल भीतर चलता रहा।कभी वितृष्णा जीत जाती तो कभी आकर्षण।अब उसने अपने पैर भी चादर के भीतर समेटने शुरू कर दिए थे।उसके रोज के साथी उसके इस बदलाव को कई नाम दे रहे थे। परंतु उसे अब किसी के कुछ भी कहने से ज्यादा फर्क नहीं पड़ रहा था।उस पर तो इस नशे के दलदल से निकलने की धुन सवार थी।इस तरह पांच छः महीने और बीत गए उसे आकर्षण और वितृष्णा के पेंडुलम पर झूलते हुए।वह शाम को स्मोकिंग बंद कर देता और दूसरे दिन जब बहुत तलब उठती तो फिर पी लेता।इस तरह से उसने कई बार खुद को आजमाया परंतु हर बार वह इस लत के आगे घुटने टेक देता। सही भी था कि एक चेन स्मोकर जो दिन के सात पैकेट फूंक देता था कैसे एक दिन में छोड़ दे।उसकी नन्ही बेटी ढाई साल की हो गई थी।अन्यथा वह यहां अकेला ही रहता था। फिर अपनी मर्जी जो मन आया वह करता था। क्योंकि पूछने वाला तो कोई होता नहीं था । कोई बंदिश नहीं थी। इसलिए उन्मुक्त परिंदा बनकर जहां दिल किया वहां उड़ जाया करता था।जीवन में बंदिशें भी बहुत जरूरी होती हैं वरना जीवन उच्छृंखल हो जाता है । यह सब उसके अकेलेपन की आवारगी और संगत का असर था कि वह नशे की दलदल में जा घुसा था। लकड़ियां इकट्ठी कर लाइब्रेरी का दरवाजा बंद करके प्रिंसिपल कार्यालय की तरफ चल पड़ा अटेंडेंस लगाने...।

अशोक दर्द डलहौजी चंबा हिमाचल प्रदेश